E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

''गोंड जनजाति का सांस्कृतिक एवं कलात्मक स्वरूप''

सरिता उलाड़ी
शोधार्थी,
चित्रकला,
जीवाजी विश्वविद्यालय,
ग्वालियर (म.प्र.)

डॉ. जया जैन
मार्गदर्शिका,
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
चित्रकला विभाग,
शासकीय कमलाराजा कन्या
स्नातकोत्तर, स्वशासीय महाविद्यालय,
ग्वालियर (म.प्र.)

Paper Received date

05/02/2026

Paper Publishing Date

10/02/2026

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.21432609

भारत के मध्यप्रदेश एक प्रसिद्ध आकर्षक भारतीय राज्य हैं, जो अपने सांस्कृतिक और कला को समेटे हुए हैं, इसमें जनजातीय समूहों की समृद्ध आबादी है, जो इसकी सांस्कृतिक विविधता को बढ़ाती है और यहाँ 43 से अधिक जनजातियाँ सद्भाव से निवास करती हैं। प्रत्येक जनजाति संप्रदाय एक अनोखी जीवन शैली का पालन करता है। गोंड जनजाति संप्रदाय एक अनोखी जीवन शैली का पालन करता है। गोंड जनजाति की संस्कृति की झलक उनके कलात्मक रूपों में प्रकृति के साथ जुड़ाव, धार्मिक, आस्था, रीति–रिवाज संस्कार परम्पराएं, जिसमें पारम्परिक कला गोंड चित्रकला संगीत एवं नृत्य कला आदि परम्परा में स्पष्ट दिखाई देती है, जो उनकी प्राचीन सभ्यता की परिचायक हैं। गोंड जनजातियों ने अपने जीवन में समय–समय पर प्रकृति एवं प्राणियों के परिवर्तित जीवन स्वरूपों को अमूल्य धरोहर संस्कृति के रूप में समाहित किया है।

भारत का हृदय कहा जाने वाला राज्य मध्य प्रदेश जो एक आदिवासी जनजातियों का बाहुल्य राज्य है। मध्यप्रदेश में मुख्यतः गोंड, भील, सहरिया, कोरकू, बैगा, भारिया, कोल, अगरिया आदि जनजातियां पाई गई है। ''मध्यप्रदेश में जितनी भी जनजातियां रहती हैं, उनकी कुल जनसंख्या में से अधिक संख्या गोंड जनजाति की है। मध्यप्रदेश उत्तरी भाग को छोड़कर बैतूल, होशंगाबाद, छिंदवाड़ा, सिवनी, बालाघाट, शहडोल, मंडला, सागर, दमोह, सतना, खंडवा, बुरहानपुर, सीहोर, रायसेन और नरसिंहपुर जिलों में गोंड जनजाति के लोग रहते है।''[1]

''गोंड जनजातीय कला का वैभव सिर्फ मध्यप्रदेश में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण संसार में विस्तारित है।''[2] इनकी अपनी संस्कृति अपना समुदाय और अपने नियम होते हैं, उनकी जीवन का कला बोध चित्र शिल्प नृत्य और गीतों में दिखाई देता है। वह कला की पूर्ति के लिए सहज उपलब्ध साधनों का उपयोग करते हैं, उनका जीवन आदर्श जीवन है वह प्रकृति प्रेमी होते हैं और पशु पक्षियों का प्रतीकात्मक रूप से प्रयोग करते हैं।

जनजाति संस्कृति में उनका परिवेश ही उनका संसार है, अतः सीमित भूभाग में प्रकृति के प्रति आस्था और श्रद्धा का भाव उत्पन्न कर वे आध्यात्मिकता को आकार देते हैं।

जॉर्ज पीटर मर्डक के अनुसार :– जनजाति एक सामाजिक समूह होता है, जिसके अंतर्गत अनेक गोत्र भ्रमणकारी झुंड ग्राम तथा उप समूह होते हैं उप समूह होते हैं इस समूह के पास एक भौगोलिक क्षेत्र एक पृथक भाषा एक भिन्न संस्कृति तथा एक आम राजनीतिक संगठन होता है, जिसमें गोंड जनजाति की अपनी पारंपरिक कलाएं हैं, जिनके आदिम अभिप्राय अलंकरण और

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

रेखाओं के हजारों रूप रंग मौजूद है, जो अपनी परंपरा अनुष्ठान और समकालीन सौंदर्य के दायरे में दिन–प्रतिदिन पुनः सृजित होते हैं। गोंड चित्रकला वह अधिक निकटता से समझने हेतु इसके स्वरूप को जानना अति आवश्यक है।

जनजातियों की सांस्कृतिक और कलात्मक उनके घरों की संरचना उनके गीत या उनके नृत्य भी शामिल हैं मनुष्य की सर्वाधिक सहज रचनात्मक अभिव्यक्ति उनका धर्म उन्हें घृणा की सीख नहीं देता बल्कि प्रकृति और मृत पूर्वजों के आनंद या और अवसाद में सम्मिलित है।

जनजातियों का मुख्य स्त्रोत प्रकृति, संस्कृति और कला है, वे प्रकृति, नदी, वृक्ष, पक्षियों से निकटता पसंद करते हैं उनकी परम्पराएं रीति रिवाज धार्मिक उत्सव और देवी देवता भी उनके कला को प्रेरित करते हैं। इन लोगों के त्यौहार पर्व या रीति रिवाज सब के सब जंगल पर आधारित हैं।

विभिन्न नए आयाम के साथ ही अपनी संस्कृति व कला परंपराओं को जोड़ते हुए उसे आधुनिक रूप भी प्रदान कर रहे हैं। जनजाति चित्रकला कैनवास भूमि एवं भवन अलंकरण तक ही सीमित नहीं है, बल्कि समय के साथ–साथ वर्तमान में हमारे भवनों की अंतः साज सज्जा आधुनिक वस्त्र सजा एवं समकालीन कलाकारों की कलात्मक पुस्तकों में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। इस कला ने उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए परिधानों के साथ पर्दे, चादर, साड़ी, दृपट्टा, रूमाल, पेन स्टैंड और कई तरह की चीज यदि पर अपनी कलात्मक छाप छोड़ी है। आज देश भर में जनजातीय के सांस्कृतिक एवं कलात्मक एवं लोक कलाओं के स्वरूप में परिवर्तन हो रहे हैं, परंतु किसी भी जनजाति लोक कला का वास्तविक सौंदर्य उनके परंपरागत स्वरूप में ही निहित होती है। युगों से प्रचलित रीति रिवाज अलग नहीं होना चाहता इस तरह गुण समाज जन्म से लगाकर मृत्यु तक कई परंपराओं का निर्वाह करता है।

गोंड जनजाति के जो लोग सांस्कृतिक एवं कला के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं, वह मुख्य रूप से मंडला डिंडोरी जिले के निवासी हैं और ये कलाकार प्रधान उप शाखा के हैं।

''कलाकारों को यह कला विरासत प्रधान कथा गायक संगीतज्ञ एवं कलाकार स्व. जनगढ़ सिंह श्याम से प्राप्त हुई, जिसे गोंड कला की शुरूआत हुई गोंड कलाकार अपनी इस चित्रकला विरासत को सर्वथा मौलिक शैली के माध्यम से आज भी लगातार आनंद उत्साह के साथ सहेजने में प्रयत्नशील हैं और विभिन्न नए आयाम के साथ ही अपनी संस्कृति व कला परंपराओं को जोड़ते हुए उसे आधुनिक रूप भी प्रदान कर रहे हैं।''[3] तकनीकी के विस्तार के साथ ही मनुष्य के निजी और सामाजिक जीवन में जो परिवर्तन हुए हैं, उनका असर कल पर भी दिखा है।

प्रधान गोंडा की उपशाखा है। गोंड शब्द की वह व्यत्पत्ति द्रविड़ भाषा के कोंड अर्थात् पहाड़ से हुई अतः कोंड पहाड़ के निवासी गोंड कहलाए।

गोंडी संस्कृति के अधिकांश लेखक तथा समाजशास्त्री इस बात पर विश्वास करते हैं लेकिन हमें गोंडी विद्वान डॉक्टर एम. कंगाली से ज्ञात होता है कि गोंड शब्द का विशिष्ट तथा अनिश्चित अर्थ है। गोंडी भाषा में गोंडोला का अर्थ समुदाय होता है जो लोग इन समुदायों में रहते हैं, वह गोंड कहलाए।

गोंड जनजाति के सांस्कृतिक स्वरूप – गोंड जनजाति समाज की संस्कृतिक उसकी जीवन शैली रहन–सहन रीति रिवाज बोली भाषा धर्म आदि को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है, जिसके माध्यम से हमें किसी क्षेत्र में निवास करने वाले जनजाति समूहों की जीवन शैली व कला परंपरा का ज्ञान प्राप्त होता है। संपूर्ण मानव सभ्यता का विकास उनकी संस्कृति पर आधारित होता है। जनजाति की संस्कृति की झलक उनके कला रूपों धर्म रीति रिवाज वाचिक परंपरा में स्पष्ट दिखाई देती है, जो उनकी प्राचीन सभ्यता की परिचायक है।

आवास एवं रहन–सहन :– गोंड प्रकृति के बीच रहना पसंद करते हैं, प्रायः जंगलों पहाड़ों या किसी नदी किनारे रहना पसंद करते हैं। अपने आसपास की उपलब्ध वस्तुओं से अपने घर को निर्मित करते हैं। ''गोंडो के घर मिट्टी घास फूस के बने होते हैं, एक झोपड़ी या मकान बनाने के लिए मिट्टी लकड़ी बांस खाई अप्रैल वह छिंद जुटा लेते हैं''[4] एक मकान 30 से 35 फीट लंबा और 10–12 फीट चौड़ा होता है थूनी, मियार,मलंगा और ठाठ से घर बनाया जाता है। गोंडो में एक कहावत है जेखर जाहिना घर द्वार तेखर, तहिना, फरिका प्रत्येक गोंडो के मकान में एक बंगला होता है, जिसमें अतिथियों को ठहराए जाते हैं।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मकान के दीवारों पर घर की स्त्रियां विभिन्न कलात्मक नोहडोरा भित्ति चित्र बनाती हैं इसमें फूल–पत्ते पशु पक्षी की आकृतियां प्रमुख हैं। मकान के पीछे वाले हिस्से में बड़ी अनिवार्य हो।

गोंड जनजाति के रीति रिवाज संस्कार परंपराए :– आदम समूह गोंड अपने रीति–रिवाज और परंपराओं से बना हुआ है युगों से प्रचलित रीति रिवाज अलग नहीं होना चाहता इस तरह गुण समाज जन्म से लगाकर मृत्यु तक कई परंपराओं का निर्वाह करता है।

जन्म संस्कार :– गोंड समाज में नवजात शिशु का जन्म सभी आदिवासी की तरह शुभ माना जाता है गोंड संतान प्राप्ति की कामना से अधिक प्रफुल्लित होता है। गोंडों में प्रथम बार गर्भधारण के लक्षण दिखते ही कुलदेवी या कुलदेवता के पूजन का उत्सव मनाया जाता है। सामान्यतः प्रसव पीड़ा होते ही गांव की दो चार सियानी महिलाएं प्रसव का पूरा कार्य घर पर ही करती थी, लेकिन अब सब नहीं होता, प्रकृति ने गोंड महिलाओं का इतना साहस प्रदान किया है, कि प्रसव होने की पूर्व तक और प्रसव के तुरंत बाद भी कार्य करने में सक्षम होती हैं। प्रसव के बाद प्रसूता को एक जंगली जड़ी बूटी देते हैं। छठवें दिन सोमवार उठाती है, जिसे छठी कहते हैं 6दिन तक बच्चा अछूत समझा जाता है। छठे दिन तक महिलाएं सोहरे और दायरे गाती हैं 12 दिन हुए नामकरण होता है।

गोंड जनजाति का विवाह संस्कार – गोंड जनजाति में विवाह केवल वंशवृद्धि के लिए ही नहीं राजा जाते बल्कि विवाह आदिम प्रेम सही हो गया और आकर्षण की अभिव्यक्ति होते हैं। गोंडों में पहले बाल–विवाह प्रथा का चलन रहा है। परंतु अब धारणा बदल गई है। गोंडों में अधिकतर लड़की 13–14 और लड़के की 15–16 में विवाह हो जाते हैं लड़का–लड़की की मर्जी के बजाय माता–पिता की रजामदी सर्वोपरि है।

गोंड जनजाति मृत्यु संस्कार – गोंड पुनर्जन्म को स्पष्ट रूप से नहीं मानते हैं इसलिए स्वर्ग या और नरक की धारणा भी गोंड की बहुत क्षीण है। गोंड आत्मा को मानते हैं, कर्म के अनुसार आत्मा भूतयोनि या देवयोनि प्राप्त करती है। पूजा करने से मृत्यु की आत्मा देवत्व प्राप्त कर लेती है, वे आत्माएं देव पितरों में नहीं मिलाई जा सकती, गोंड मृतक संस्कार में तेरहवीं का महत्वपूर्ण क्रिया कर्म है जूही से 13 दिन के बाद करते हैं, इसे बड़ा काम भी कहा जाता है। मृत्यु के बाद दफनाया जाता है, यह जनजातीय सूरज चांद बादल बिजली वर्षा यदि के प्रति आस्थावान है, इनका कोई धार्मिक ग्रंथ नहीं है गोंडो को अपने देवी देवताओं पर अटूट विश्वास रहता है।

जनजाति संस्कृति का वर्गीकरण को निम्न अनुसार तीन परिदृश्य में देखा जा सकता है।

देव मूलक संस्कृति – पुखराल में धरती के अलावा सृष्टि के संतुलन के लिए अनेक ग्रह उपग्रह नक्षत्र एवं तारे आदि अपने–अपने पद पर चलायमान है, जो पूरी सृष्टि को किसी न किसी रूप में प्रभावित करते हैं, इनका पुखराल में स्थायित्व एवं संचलन प्रकृति के जीवन का आधार है, इनका प्रभाव संपूर्ण जीवमंडल पर पड़े बिना नहीं रहता अतः संपूर्ण जीव जगत को प्रभावित करने वाले ग्रह, नक्षत्र, तारे, जल, थल, वायु, आकाश, अग्नि, वन तथा अपने पूर्वजों की आदिम समाज द्वारा देवी देवता के रूप में निम्न अनुसार पूजा विधान की महत्व मिलती है।

प्रकृति मूलक संस्कृति – ''सृष्टि में प्राणियों का साक्षात्कार सर्वप्रथम प्रकृति से हुआ तब प्राणियों को सर्वप्रथम आवश्यकता आहार की हुई एवं उसे पहचाना प्रकृति के समस्त प्राणी आहार के लिए पेड़–पौधे, फूल, फल, पत्ते तथा दूसरे प्राणियों पर निर्भर हो गए ग्राम जीवन में प्रकृति प्रेम एवं पूजा का निम्न अनुसार स्वरूप दिखाई देता है।''[5]

पूर्वज मूलक संस्कृति – गोंड आदिवासी समुदाय अपने पूर्वजों की पवित्र आत्मा को ही देवी–देवता, माता–पिता के रूप में घर में स्थापित कर पूजा करता है। माता–पिता पूर्वजों से बढ़कर उनका कोई और भगवान नहीं है। अपने पूर्वजों की पवित्र आत्मा को अपने घर के देवी–देवता के रूप में स्थापित किया जाना तथा उनकी नित्यपूजा करने का विधान केवल आदिवासी संस्कृति में ही मिलता ह। प्रतिदिन का भजन करता है, अन्य समुदाय वर्ष में केवल एक दिन पितरों की पूजा करते हैं और भोग चढ़ता है, इस प्रकृति में पैदा होने वाला भौतिक शरीर अंत में पांच तत्वों में विभक्त होकर प्रकृति में विलीन हो जाता है। उत्पत्ति और अंत प्रकृति का विधान है, इस विधान से बढ़कर और कोई सत्य नहीं है इसलिए आदिवासी समुदाय के आध्यात्मिक एवं संस्कृति मैं इसी शाश्वत प्राकृतिक शक्ति की पूजा प्रकृति पूजा के रूप में मिलती है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

गोंड जनजाति के रीति रिवाज संस्कार परंपराएं – आदिम समूह गोंड अपने रीति–रिवाज और परंपराओं से बना हुआ है। युगों से प्रचलित रीति रिवाज अलग नहीं होना चाहता इस तरह गुण समाज जन्म से लगाकर मृत्यु तक कई परंपराओं का निर्वाह करता है।

गोंड जनजाति की कलात्मक स्वरूप – गोंड जनजाति कला मध्यप्रदेश में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में फैली हुई है, जिनमें आदिम अभिप्राय अलंकरण और रेखाओं के हजारों रूप रंग मौजूद हैं। गोंड जनजाति जो अनेक उपशाखाओं में विभाजित है, इसकी उपशाखाओं द्वारा विभिन्न कलात्मक एवं अकलात्मक स्वरूप को चित्रित किया जाता है, जो उनके जीवन की होने के साथ–साथ रहन–सहन और स्वभाव से ही परिचित कराती है।

कलाकार कला को पूर्ण रूप से आनंद लेता है, विभिन्न कलाओं को रूप देता है। अपनी पंरपरा एवं पवित्रता को भी जीवित बनाए रखती है जो उनकी संस्कृति और सभ्यता को व्यक्त करती है।

जिसमें पारंपरिक कला, गोंड चित्रकला, संगीत एवं नृत्य कला, यदि प्रमुख है–

पारंपरिक गोदना कला – लोक संस्कृति एवं जनजाति जीवन से जुड़ी एक अत्यंत पुरातन अनुपम मनमोहन कला है। गोदना इसकी परंपरा अति प्राचीन काल से चली आ रही है, जो धार्मिक एवं आध्यात्मिक अनुभूति के साथ श्रृंगारिक अभिकृतियों से अनू प्रेरित है। आदिवासियों में शरीर गुदवाने की प्रथा सबसे अधिक है। ''गोदना गुदवाने के पीछे यही भावना है कि यह स्त्री के सच्चे जेवरों की निशानी है। जो मरते समय भी उनके साथ जाती है।''[6]

चौक पूरना – चौक पूरने की परंपरा धार्मिक मान्यता से है, जो शुभ कार्य स्वरूप एवं सजावट के उद्धेश्य से बनाया जाता है। चौक रंगोली का ही एक रूप है, चौक आते और हल्दी द्वारा बनाया जाता है। चौक पूरने का एक रूप है चौक, आटा और हल्दी द्वारा बनाया जाता है। चौक पूरने का कार्य मुख्य रूप से महिलाएं ही करती हैं।

नाहडोरा – नाहडोरा गोंड प्रधान की परंपरागत चित्रण है, जिसमें घरों को तीज त्योहार में गोबर से लीप पोत कर घर के बाहर की दीवारों को चारों तरफ से चित्र बनाकर बांध दिया जाता है। दीवारों को सफेद मिट्टी से पोत कर दीवार के एक छोर से दूसरे छोर तक गोबर और कपड़े की सहायता से रेखाएं बनाई जाती है, जो देखने में काफी सुंदर प्रतीत होती है। नाहडोरा अंकित करने की मान्यता के पीछे गोंडो का धार्मिक आस्थाओं एवं पारंपरिक चित्रण है।

भित्ति चित्रण – गोंड जनजाति में यह भित्ति चित्रण डिगना का ही एक रूप है, जिसमें बॉर्डर की जगह विस्तृत दीवार पर उभार कर आकृतियां बनाई जाती है, गोंड जनजातियों के घरों के दीवारों को सुसज्जित करने की भित्ति चित्रण परंपरा सदियों से चली आ रही है। गोंड समुदाय इस पारम्परिक कला का घर बनाते समय उत्सवों त्योहारों एवं पारिवारिक समारोह पर मिट्टी के रंगों जैसे गैरू रामराज जूही, मिट्टी, नील एवं मिट्टी नील एवं प्रकृति रंगों से मिट्टी की दीवार पर बनाया जाता है। गोंडो का प्रिय शौक है गोंड भित्ति अलंकरण बनाना कलात्मक आकृतियां बनाकर अपने घरों को सजाने की परंपरा अति प्राचीन है, जिसे भित्ति चित्र कहते हैं। भित्ति चित्र का स्थान गोंड कला ने लिया है। जिसमें कलाकार विभिन्न आकृतियां को सपाट रूप में

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

अंकित कर एक्रेलिक रंगों का प्रयोग कर रहे हैं, इस परंपरागत प्रथा के आदिम कला वैभव को नई पीढ़ी के कलाकार नवीन प्रयोग कर रहे हैं।

गोंड चित्रकला – गोंड जनजाति पीढ़ियों से अभिव्यक्ति और कहानी के साधन के रूप में एक कला का अभ्यास करती रही है। जीवंत रंग जटिल पैटर्न और अद्वितीय रूपांकन इस चित्रकला की विशेषता है, जो प्रकृति पौराणिक कथाओं और दैनिक जीवन के तत्वों को दर्शाती है। कलाकार डिजाइन के भीतर डॉट के जटिल पैटर्न बनाने के लिए एक बढ़िया ब्रश का उपयोग करते हैं। आयाम की भावना पैदा करने और विशिष्ट तत्वों को बाहर लाने के लिए छायांकन को भी शामिल किया जाता है। गोंड प्रधान चित्रों को बहुत ही सटीकता और कौशल के साथ बनाया जाता है।''गोंड कला चित्रों में मुख्य रूप से मोर पक्षी, केकड़ा पौराणिक जानवर छिपकली, शेर, बाघ, हिरण, सांप यदि के चित्र दर्शाए जाते हैं, उनके चित्र में एक मुख्य डिजाइन उनके लोकगीत की जड़ महुआ वृक्ष को दर्शाते हैं। महुआ के वृक्ष को जीवन के वृक्ष के रूप में दर्शाया जाता है। चित्रों में स्थानीय देवताओं जैसे फुलवारी देवी, हरिन देवी, और मरही देवी भगवान शिव, भगवान कृष्ण, भगवान गणेश जैसे देवताओं को भी चित्रित किया गया गोंड कलाकार आधुनिक डिजाइन जैसे हवाई जहाज साइकिल कर तकनीक आदि को भी चित्रित करते हैं।''[7] प्रस्येक गोंड कलाकार चित्रों को भरने के लिए अपने विशिष्ट पैटर्न और शैली का उपयोग करते हैं, कुछ हस्ताक्षर पैटर्न बिंदु महीन रेखाएं घुमावदार रेखाएं देश मछली के तराजू बिन्दी के आकार और ज्यामिति आकर के बनाए जाते हैं। गोंड कलाकारों की अपनी अलग तकनीक एवं ज्यामिति आकार के बनाए जाते हैं गोंड कलाकारों की अपनी अलग तकनीक एवं पैटर्न होने के कारण उनकी कृतियां विश्व भर में ख्याति प्राप्त में ख्याति प्राप्त कर रही है और जनमानक के लिए आकर्षक का केंद्र भी बनी हुई है। गोंड जनजाति कला में हाल में ही वैश्विक कला उद्योग में विश्व व्यापी मान्यता और लोकप्रियता प्राप्त की है वस्त्र परिधान है और आंतरिक डिज़ाइन में अपनी कलाकृति को शामिल करके उनकी रचनात्मक प्रतिभा और कलात्मक महारत को सार्वभौमिक रूप से अधिक मान्यता और प्रशंसा मिली है। समय के साथ–साथ किसी भी कल या उसकी तकनीक में बदलाव क्यों ना आ जाए परंतु प्रत्येक संस्कृति अपनी परंपरा व कला द्वारा जन सामान्य पर अपनी छाप छोड़ते है। हमेशा जीवित रहती है और अपनी संस्कृति एवं कला का प्रचार प्रसार करती है। स्वर्गीय जन गण सिंह श्याम ने अपनी आकृति उखेरने से प्रारंभ होकर पटनगढ़ की दीवारों पर सरकार होने लगी थी और जब उन्हें अपनी कला को प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त हुआ।

यह कला प्रकाश में आई जब भारत भवन भोपाल के संस्थपक एवं प्रसिद्ध कलाकार जगदीश स्वामीनाथन ने अपने शिष्यों के साथ आदिवासी कला को संसार के सामने लाने का प्रयास किया, जब स्वर्गीय स्वामी नाथन के सहयोग से जनगढ़ के हाथ में खुशी एवं रंग आए तो, उनके अंतर्मन की सृजनात्मकता एक नया रूप लेने लगी।

आज गोंड शैली के अनेक कलाकार राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बन चुके हैं, तथा दिन प्रतिदिन प्रयासरत हैं। इस प्रकार स्वर्गीय स्वामीनाथन ने इन जनजाति कलाकारों के हाथों में रंग एवं ब्रश देकर उन्हें स्वतंत्र रचना कर्म के लिए प्रेरित किया, उन्होंने इन गोंड कलाकारों को समकालीन कलाकारों के समतुल्य दर्जा प्राप्त कराया वर्तमान में मध्य प्रदेश में बहुत से ऐसे गोंड कलाकार हैं, जिनकी स्वयं की पहचान है, जिसमें ननकुसियां, श्याम, भज्जू श्याम, वेंकट श्याम, आनंद श्याम, राम सिंह, दुर्गाबाई आदि के नाम प्रमुख है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

संगीत एवं नृत्य – लोकनृत्यों को ''गोंड समाज स्वयं की प्रेरणा से बिना संगीत लय ताल के सीखे हुए स्वयं ही नाचता है। नाचते–नाचते प्रत्येक आदिवासी उसमें परम्परागत हो जाता है।''[8] यह विभिन्न क्षेत्रों में वहां की प्राकृतिक बनावट के अनुसार अपना विविध स्वरूप का लेते हैं। आदिवासियों के नृत्य में स्थानीय विशेषताओं के साथ विभिन्नता मिलती है, पर सभी स्थानों में जो एक रूप है वह समूह में नृत्य करना आदिवासियों ने प्रकृति से सीखी है। आकाश में उड़ती हुई, कुल पक्षियों की कतारों ने, इन्हें नृत्य में एक कतार बनाने की प्रेरणा दी है। वन में उगे हुए वृक्षों ने इन्हें समूह में रहना सिखाया हवा के झोंकों से लहराती हुई, खेत की फसलों जंगल की वनस्पतियों ने, इन्हें नृत्य की लोच सिखाए और नदी नालों में उठती हुई लहरों ने इन्हें नृत्य की गोल घर में बांधना सिखाए बादलों की गरज–तरज तथा कड़क और चमकने इन्हें मादर अंतिम की वाद्य की ध्वनि दी और सनसनाती हुई हवा ने इन्हें बांसुरी बजाना सिखाए गरज यह कि इन्होंने अपने नृत्य हुआ गीतों में प्रकृति की छटा को बांधा और प्रकृति ने नृत्य गीत की शिक्षा दी। प्रधान गोंड जनजाति समुदाय में अपनी लोकगीतों और आदिवासी कहानियों को गीतों के माध्यम से आगे बढ़ाया साथ ही तार वाले बना कि ध्वनि के साथ संगीत वाद्य यंत्र बजाते हुए, वह साजा के पेड़ के नीचे भगवान बड़ा देव की प्रार्थना और आव्हान करते हैं।

आज देश भर में जनजातीय एवं लोक कलाओं के स्वरूप में परिवर्तन हो रहे हैं, परंतु किसी भी जनजाति एवं लोककला का वास्तविक सौंदर्य इनके परंपरागत स्वरूप में ही निहित है। वर्तमान समय में बाजार के बढ़ते प्रभाव के कारण यह कलाएं महानगरी जीवन के संपर्क में आने से बहुत अधिक प्रभावित हुई है और हम उनके स्वरूप में अनेक परिवर्तन भी देख रहे हैं।

मध्यप्रदेश की गोंड जनजाति की सांस्कृतिक एवं कलात्मक की झलक उनके द्वारा निर्मित विभिन्न प्रकार की कलाकृतियों में उनकी कला संस्कृति का स्वरूप स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, इनके द्वारा बनाई गई चित्रों एवं विभिन्न कलाओं में गोंड जनजाति के जातीय स्मृति चिन्ह का बोध कलाकृतियों के माध्यम से होता है। जनजातीय समाज के लोग अपने स्वभाव के अनुरूप अपनी संस्कृति एवं कला परम्परा को आदिकाल से ही सहेजते संवारते आ रहे हैं। आधुनिक युग में भी अपनी संस्कृति और सभ्यता को जीवंत बनाए रखने के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. तिवारी कपिल सम्पदा मध्य प्रदेश जनजातीय सांस्कृतिक परम्परा का साक्ष्य 2006 पृष्ठ संख्या 301।

2. वाजपेयी उद्दयन जनगण कलम वन्या प्रकाशन पृ.सं. 50।

3. वाजपेयी उदयन जनगढ़ कलम वन्या प्रकाशन पृ.सं. 73।

4. तिवारी कपिल सम्पदा मध्यप्रदेश की जनजातीय सांस्कृतिक परम्परा का साक्ष्य 2006 पृ.सं. 339।

5. डॉ. अमित मालिक भारतीय जनजातियां 123।

6. तिवारी कपिल सम्पदा मध्यप्रदेश की जनजातीय सांस्कृतिक परम्परा का साक्ष्य 2006 352।

7. वाजपेयी, उदयन, जनगढ़ कलम वन्या प्रकाशन पृ.सं. 75।

8. डॉ. अमित मलिक भारतीय जनजातियां सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक स्थिति विश्व भारतीय पब्लिकेशन नई दिल्ली 110002। पृ. सं.151

9. स्वयं सर्वेक्षण एवं गोड़ परधान जनजातियों से साक्षात्कार ग्राम पाटनगढ़ जिला डिंडोरी दिनांक – 24/06/2024।